हैं। इस प्रकार वर्णसमूह को प्रत्याहारों द्वारा निर्दिष्ट किया जाता है। पाणिनि ने कुल 42 प्रत्याहारों का प्रयोग अपने व्याकरणग्रन्थ (अष्टाध्यायी) में किया है। यहाँ सुविधा की दृष्टि से कुछ प्रत्याहारों और उनके अन्तर्गत आए हुए वर्णों को देखा जा सकता है–

अण् – अ, इ, उ

अक् – अ, इ, उ, ऋ, ऌ

इक् – इ, उ, ऋ, ऌ

एङ् – ए, ओ

एच् – ए, ओ, ऐ, औ

ऐच् – ऐ, औ

खर् – ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स

जश् – ज, ब, ग, ड, द

यण् – य, र, ल, व

अभ्यासः

1. **प्रत्याहार किसे कहते हैं ? सोदाहरण समझाएँ।**
2. **निम्नांकित प्रत्याहारों में समाविष्ट वर्णों को लिखें–**

   अच्, हश्, खर्, शल्, यण्, अक्

(ख) सन्धिः

संस्कृत भाषा में दो वर्णों के मिलने से जो विकार उत्पन्न होता है उसे सन्धि कहते हैं। जैसे-गिरि + इन्द्रः = गिरीन्द्रः। यहाँ पूर्वशब्द (गिरि) के अन्तिम अक्षर ''इ'' का परवर्ती शब्द (इन्द्रः) के प्रथम अक्षर ''इ'' के साथ मेल होने पर 'ई' ऐसा विकार हुआ। अतः सन्धि है।

सन्धि के तीन भेद हैं-अच् सन्धि, हल् सन्धि (व्यञ्जन सन्धि) तथा विसर्ग सन्धि । स्वर का स्वर से मेल होने पर जो विकार उत्पन्न होता है उसे अच् सन्धि या स्वर सन्धि कहते हैं । अच् सन्धि के मुख्य भेदों को हम यहाँ देखें ।

(i) यण् सन्धि – इको यणचि । इक् प्रत्याहार के वर्णों का यण् प्रत्याहार का वर्ण में परिवर्तन हो जाता है यदि परवर्ती शब्द के आरम्भ में कोई अन्य स्वरवर्ण हो । तदनुसार इ का य्, उ का व्, ऋ का र्, और ऌ का ल् हो जाता है । इक् प्रत्याहार में भी चार वर्ण हैं और यण् प्रत्याहार में भी चार वर्ण हैं । इनका क्रमशः परिवर्तन होता है।

उदाहरण-

नदी + अस्ति	=	नद्यस्ति
यदि + अपि	=	यद्यपि
अपि + एकः	=	अप्येकः
इति + आदि	=	इत्यादि
अति + आवश्यकः	=	अत्यावश्यकः

इन सब में इ/ई का य् हो गया है।

अनु + अयः	=	अन्वयः
मधु + अरिः	=	मध्वरिः
वधू + आगमनम्	=	वध्वागमनम्

इन सब में उ/ऊ का व् हो गया है ।

मातृ + आदेशः	=	मात्रादेशः
पितृ + अंशः	=	पित्रंशः
ऌ + आकृतिः	=	लाकृतिः

यहाँ ऋ का र् तथा ऌ का ल् हो गया है।

(ii) दीर्घसन्धि – अकः सवर्णे दीर्घः । अक् (ह्स्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ) यदि समान वर्ण के साथ मिले तो दीर्घ एकादेश हो जाता है ।

जैसे- अद्य + अपि = अद्यापि

नर + अधमः	=	नराधमः
देव + आलयः	=	देवालयः
तथा + अस्तु	=	तथास्तु
महा + आत्माः	=	महात्माः
विद्या + आलयः	=	विद्यालयः

यहाँ अ/आ के बाद अ/आ मिलने से 'आ' के रूप में दीर्घ एकादेश हो गया है

अपि + इदम्	=	अपीदम्
गिरि + ईशः	=	गिरीशः
अधि + ईश्वरः	=	अधीश्वरः
मही + इन्द्रः	=	महीन्द्रः

यहाँ इ/ई के बाद इ/ई मिलने से "ई" के रूप में दीर्घ एकादेश हो गया है ।

लघु + ऊर्मिः	=	लघूर्मिः
भानु + उदयः	=	भानूदयः

यहाँ उ/ऊ के बाद उ/ऊ होने से 'ऊ' के रूप में दीर्घ एकादेश है।

(iii) गुण सन्धि – आद् गुणः । अ/आ के बाद इ/ई होने से ए, उ/ऊ होने से ओ तथा ऋ होने से अर् एकादेश हो जाता है ।

जैसे- तव + इदम्	=	तवेदम्
तथा + इति	=	तथेति
परम + ईश्वरः	=	परमेश्वरः

महा + ईशः = महेशः

तस्य + उपरि = तस्योपरि

सीता + उवाच = सीतोवाच

सदा + ऊर्ध्वम् = सदोर्ध्वम्

समुद्र + ऊर्मिः = समुद्रोर्मिः

परम + ऋषिः = परमर्षिः

महा + ऋषिः = महर्षिः

उत्तम + ऋणः = उत्तमर्णः

(iv) वृद्धि सन्धि – वृद्धिरेचि । अ/आ के बाद ए/ऐ होने से "ऐ" एकादेश होता है, इसी प्रकार अ/आ के बाद ओ/औ होने से "औ" एकादेश होता है । इसे वृद्धि सन्धि कहते हैं ।

जैसे – एक + एकम् = एकैकम्

तथा + एव = तथैव

महा + ऐश्वर्यम् = महैश्वर्यम्

महा + ओषधिः = महौषधिः

जल + ओघः = जलौघः (बाढ़)

हृदय + औदार्यम् = हृदयौदार्यम्

(v) अयादि सन्धि–एचोऽयवायावः । एच् प्रत्याहार (ए, ओ, ऐ, औ) का क्रमशः अय्, अव्, आय्, आव् हो जाना अयादि संधि है । किसी भी स्वर के पूर्व ऐसा वर्णविकार होता है जैसे–

ने + अनम् = नयनम् (ए का अय्)

शे + अनम् = शयनम् (ए का अय)

भो + अनम् = भवनम् (ओ का अव्)

पो + अनः = पवनः (ओ का अव)

नै + अकः = नायकः (ऐ का आय्)

गै + अनम् = गायनम् (ऐ का आय्)

पौ + अनः = पावनः (औ का आव्)

भौ + अकः = भावकः (समीक्षा करने वाला, औ का आव्)

(vi) पूर्वरूप सन्धि – एङः पदान्तादति । पदान्त एङ् प्रत्याहार (ए/ओ) क बाद परवर्ती शब्द अ से आरम्भ हो रहा है तो केवल पूर्व अक्षर के रूप में एकादेश होत है । अर्थात् ए + अ = ए । ओ + अ = ओ ।

जैसे –रामे + अपि = रामेऽपि

गृहे + अस्मि = गृहेऽस्मि

बालको + अयम् = बालकोऽयम्

बालो + अहम् = बालोऽहम्

सो + अवदत् = सोऽवदत्

जातो + अहम् = जातोऽहम्

उपर्युक्त उदाहरणों में विसर्ग सन्धि के नियमों से विसर्ग का ओकार हुआ है । इसलिए मूलतः बालकः+अयम्, बालः+अहम्, सः+अवदत्, जातः +अहम्–इसी रूप में सन्धिविच्छेद होगा ।